SENIOR SCHOOL CERTIFICATE EXAMINATION
MARCH-2018

अंक योजना – अर्थ शास्त्र (ALL INDIA)

Expected Answers / Value Points

अपेक्षित उत्तर / मूल्यांकन बिंदु

सामान्य निर्देश

1 The Marking Scheme carries only suggested value points for the answers. These are only guidelines and do not constitute the complete answers. Students can have their own expression and if the expression is correct, marks should be awarded accordingly.

2 As per orders of the Hon'ble Supreme Court,a candidate would now be permitted to obtain a photocopy of his/her Answer Book on payment of the prescribed fee.Examiners/Head Examiners are,therefore,once again reminded that they must ensure that evaluation is carried out strictly as per value points for each answer as given in the Marking Scheme.

3 Head Examiners/Examiners are hereby instructed that while evaluating the answer books, if the answer is found to be totally incorrect, the (X) should be marked on the incorrect answer and awarded '0' mark.

4 Please examine each part of a question carefully and allocate the marks allotted for the part as given in the 'Marking Scheme' below. TOTAL MARKS FOR ANY ANSWER MAY BE PUT IN A CIRCLE ON THE LEFT SIDE WHERE THE ANSWER ENDS.

5 Expected/suggested answers have been given in the 'Marking Scheme'. To evaluate the answers, the value points indicated in the marking scheme should be followed.

6 For questions asking the candidate to explain or define, the detailed explanations and definitions have been indicated alongwith the value points.

7 For mere arithmetical errors, there should be minimal deduction. Only ½ mark should be deducted for such an error.

8 Where only two / three or a 'given' number of examples / factors / points are expected, only the first two / three or expected number should be read. The rest are irrelevant and must not be examined.

9 There should be no effort at 'moderation' of the marks by the evaluating teachers. The actual total marks obtained by the candidate may be of no concern to the evaluators.

10 Higher order thinking ability questions are for assessing a student's understanding / analytical ability.

General Note: In case of a numerical question, no marks should be awarded if only the final answer has been given, even if it is correct.

Expected Answer / Value Points

Set1	Set2	Set3	अनुभाग अ	**अंक वितरण**
1.	3	2.	दुर्लभता की समस्या का अर्थ है कि जब मांग की तुलना में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नही होते |	1
2.	2	3.	अर्थशास्त्र में लागत का अर्थ स्पष्ट लागत तथा अस्पष्ट (निहित) लागत के योग से है जिसमें सामान्य लाभ भी शामिल होता है | अथवा लागत का अर्थ आगतो पर वास्तविक मौद्रिक व्यय और उत्पादन स्वामी द्वारा अपने पास से दी गयी आगतो का, सामान्य लाभ सहित, अनुमानित मूल्य के योग से है |	1
3.	1	4.	(स) गिर सकती है या बढ़ सकती है |	1
4.	4	1.	(ब) बढता है	1
5.	5	6.	व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत आर्थिक इकाईयो के व्यव्हार का अध्ययन करती है | जबकि समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के व्यव्हार का अध्ययन करती है | व्यष्टि अर्थशास्त्र का उदाहरण - उपभोक्ता संतुलन (अथवा अन्य कोई उपयुक्त उदाहरण) समष्टि अर्थशास्त्र का उदाहरण- राष्ट्रीय आय (अथवा अन्य कोई उपयुक्त उदाहरण) अथवा उत्पादन सम्भावना वक्र दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगो / संभावनाओ को दर्शाता है जो की दिये गये संसाधनों व तकनीक के द्वारा उत्पादित किये जा सकते है यह मानते हुए कि संसाधनों का पूर्ण व कुशलतम उपयोग किया गया है | हाँ, PPC (उत्पादन सम्भावना वक्र) खिसक सकता है, जब i) संसाधनों में परिवर्तन होता है ii) तकनीक में परिवर्तन होता है	1+1 ½ ½ 1 1+1
6.	6	5.	i) प्रतिस्थापन (स्थानापन्न) वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन ii) पूरक वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन iii) उपभोक्ता की आय में परिवर्तन **(अथवा और कोई तीन उपयुक्त निर्धारक)**	3x1=3
7.	9.	8.	मांग वक्र Y-अक्ष के समानांतर होगा क्योकि कीमत में परिवर्तन से मांग में कोई परिवर्तन नही हो रहा है | **(रेखाचित्र आवश्यक नहीं)**	4

8.	7.	9.	संप्राप्ति (आगम) का अर्थ है उत्पाद की इकाईओ की बिक्री से प्राप्त राशि | MR तथा AR में सम्बन्ध तालिका इकाई कीमत/**AR** **TR** **MR** 1 10 10 10 2 10 20 10 3 10 30 10 4 10 40 10 MR तथा AR उत्पाद के प्रत्येक स्तर पर समान होते है अथवा **Diagram** 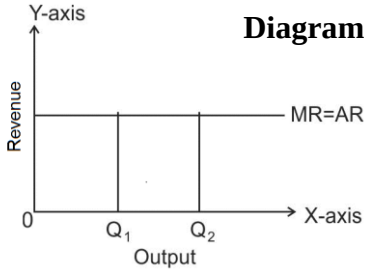 अथवा MR वक्र X अक्ष के समानांतर है तथा AR के समान है अथवा पूर्ति से अभिप्राय एक वस्तु की उस मात्रा से है जिसे एक उत्पादक एक निश्चित समय अवधि में एक निश्चित कीमत पर पूर्ति करने को तैयार होता है | **<u>पूर्ति में वृद्धि</u>** से अभिप्राय वस्तु की स्वयं की कीमत के अतिरिक्त अन्य किसी कारक में अनुकूल परिवर्तन के कारण वस्तु की पूर्ति में वृद्धि होने से है जबकि **<u>पूर्ति में विस्तार</u>** से अभिप्राय अन्य कारक यथा स्थिर रहने पर वस्तु की कीमत में वृद्धि के कारण पूर्ति की मात्रा में होने वाली वृद्धि से है		1 3 1½ 1½
9.	8.	7.	“न्यूनतम कीमत” सीमा निर्धारण से अभिप्राय उस न्यूनतम कीमत से है जिसे सरकार द्वारा निधारित किया जाता है तथा कोई भी उत्पादक अपने उत्पाद को इस कीमत से कम कीमत पर नही बेच सकता है	 क्योकि प्राय: यह कीमत संतुलन कीमत से अधिक होती है इसलिए बाज़ार में पूर्ति आधिक्य की स्थिती होती है अत: उत्पादक अपने उत्पाद को इस कीमत पर नही बेच पाता तथा वह गैरकानूनी रूप से न्यूनतम कीमत से कम कीमत पर अपने उत्पाद को बेचने का प्रयत्न करता है		1 3
10.	11.	12.	माना उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं x तथा y का उपभोग करता है तब संतुलन की शर्ते निम्न है : १ $\frac{MU_X}{P_X}=\frac{MU_y}{P_y}$ २ जब वस्तु की अधिक मात्रा का उपभोग किया जाता है तब MU घटती है व्याख्या : १. यदि $\frac{MU_X}{P_X}>\frac{MU_Y}{P_Y}$ इस स्थिति में उपभोक्ता को y वस्तु के मुकाबले x वस्तु से अधिक प्रति रुपये सीमान्त उपयोगिता प्राप्त होती है अत: वह x को अधिक खरीदेगा और y को कम खरीदेगा	इससे MU_X में कमी आयेगी और MU_y बढ़ेगा | उपभोक्ता तब तक y को खरीदना जारी रखेगा जब तक $\frac{MU_X}{P_X}=\frac{MU_Y}{P_Y}$ (इस प्रकार $\frac{MU_X}{P_X}<\frac{MU_Y}{P_Y}$ पर आधारित उत्तर भी मान्य होगा)		1 1 3 1

			२. जब उपभोग बढता है तो MU घटता है | अगर MU नहीं घटेगा तो उपभोक्ता संतुलन पर नही पहुचेगा | **(आरेख आवश्यक नही है)** **अथवा** अनधिमान वक्र की तीन विशेषताए निम्न है 1) **IC वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढलवां होता है** | इसका अभिप्राय है कि जब एक उपभोक्ता एक वस्तु का अधिक उपभोग करता है तो उसे दूसरी वस्तु का उपभोग कम करना होगा जिससे उपभोक्ता के संतुष्टि का स्तर एक अनधिमान वक्र पर समान बना रहता है | 2) **IC वक्र मूल बिंदु की और उत्तल होता है** इसका कारण यह है की जब एक वस्तु का उपभोग बढ़ाया जाता है तब MRS घटती है जो कि सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के कारण है | 3) **दायीं और का IC संतुष्टि के उच्च स्तर को दर्शाता है** इसका कारण यह है की दायीं तरफ का IC अधिक वस्तुओ की इकाईओ के उपभोग को दर्शाता है और अधिक इकाईओ के उपभोग का अर्थ है अधिक संतुष्टि **(आरेख आवश्यक नहीं)** **(एक अंक कथन के लिए तथा अंक व्याख्या के लिए)**	1 1 1 1 1 1
11.	12.	10.	परिवर्ती अनुपातों का नियम : जब अन्य आगतों को स्थिर रख कर किसी एक आगत की इकाइयों को बढाकर उत्पादन किया जाता है तो प्रारंभ में कुल उत्पाद बढती दर से बढ़ता है फिर घटती दर से बढ़ता है ,और अंत में कुल उत्पाद घटने लगता है | 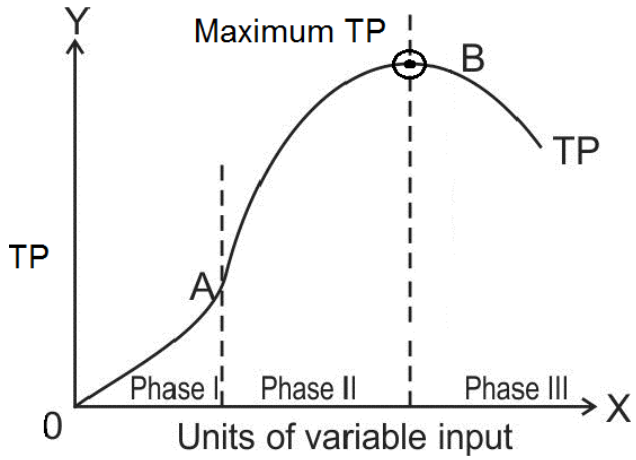 प्रथम चरण - प्रथम चरण में TP बिंदु A तक बढती दर से बढ़ता है . द्वितीय चरण - TP बिंदु A से B तक घटती दर से बढ़ता है . तृतीय चरण - ,TP बिंदु B के पश्चात घटने लगता है . **(दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए कोई भी उपयुक्त संख्यात्मक तालिका)**	1 2 1 1 1
12.	10.	11.	1) **क्रेता व् विक्रेताओं की बड़ी संख्या** – क्रेता तथा विक्रेताओ की संख्या अधिक होने के कारण व्यक्तिगत क्रेता तथा विक्रेता का बाज़ार मांग तथा पूर्ति में योगदान महत्वहीन होता है | 2) समरूप उत्पाद – सभी फर्मे समरूप वस्तुओ का उत्पादन करती है क्योकि सभी क्रेता बाज़ार में स्थित सभी फर्मो के उत्पाद के साथ समान व्यवहार करते है |	

			3) पूर्ण ज्ञान – सभी क्रेताओ तथा विक्रेताओ को बाज़ार के बारे में पूर्ण जानकारी है | 4) प्रवेश तथा बहिर्गमन की स्वतंत्रता –दीर्घ काल में नई फर्मो के उद्योग में प्रवेश तथा वर्तमान फर्मो के बहिर्गमन में कोई अवरोध नही होता |	1½x4=6
			अनुभाग ब	
13.	14.	16.	(अ) में वृद्धि होती है	1
14.	13.	15.	मुद्रा गुणक का मूल्य = 5	1
15.	16.	14.	(ब) लोगो को बैंकिंग सुविधाए	1
16.	15.	13.	औसत बचत प्रवृति का मूल्य = 0.25	1
17.	17.	18.	(अ) <u>टैक्सी के रूप में प्रयोग आ रही कार</u> - एक पूंजीगत वस्तु है क्योंकि इसका प्रयोग आय अर्जन हेतु सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जा रहा है | (b) <u>होटल में रेफ्रीजरेटर</u> – एक पूंजीगत वस्तु है क्योंकि यह उत्पादन इकाई द्वारा सेवाओं के उत्पादन हेतु प्रयोग किया जा रहा है | (c) घर में एयरकंडीशनर – यह उपभोक्ता वस्तु है क्योकि इसका उपभोग एक उपभोक्ता द्वारा अपनी आवश्कयता की पूर्ति के लिए किया जा रहा है | **(यदि कारण नहीं दिया हो तो कोई अंक नहीं दें)** **अथवा** मध्यवर्ती उपभोग से तात्पर्य उत्पादक इकाई द्वारा उन वस्तुओं एवं सेवाओं पर किये गए व्यय से है जो या तो पुन: बेचने के उद्देश्य से किये जाएँ या उनका उपयोग उसी वर्ष में करना हो | उदाहरण: होटल द्वारा दूध की खरीद क्योंकि यह अन्य उत्पादन इकाई से पुन :बिक्री हेतु (परोक्ष रूप से) खरीदी जाती है |(अन्य कोई उपयुक्त उदाहरण) **जबकि** अंतिम उपभोग से तात्पर्य उन वस्तुओं एवं सेवाओं पर किये गए व्यय से है जो अंतिम उपभोग या निवेश हेतु किया जाता है |.	1 1 1 1½ ½ 1
18.	18.	17.	i) C = 100 + 0.6Y (प्रश्न में दिया गया है) अत: MPC = 0.6 MPS = 1 – MPC = 1 – 0.6 = 0.4 ii) $S = -\overline{C} + (1 - b)Y$. S = –100 + 0.4 Y	1 1 1
19.	21.	20.	a) बैंक दर नीति – बैंक दर वह ब्याज दर है जिस पर केंद्रीय बैंक व्यावसायिक बैंकों को ऋण प्रदान करता है |. बैंक दर में होने वाली वृद्धि व्यावसायिक बैंकों के लिए केंद्रीय बैंक से लिए जाने वाले ऋण की लागत को बढा देती है अत: व्यावसायिक बैंक अपनी ब्याज दर में वृद्धि करते है जिससे जनता द्वारा की जाने वाली ऋण की मांग में कमी आती है जिससे कुल साख में कमी आती है | **(विपरीत स्थिति में बैंक दर में कमी)**	2

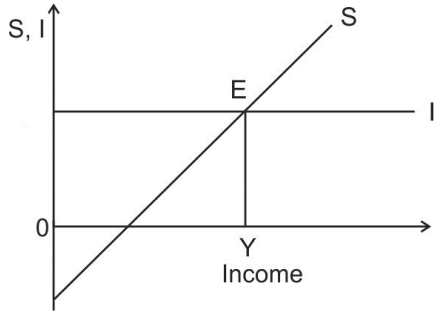

<table>
<tr><td></td><td></td><td></td><td>b) नकद आरक्षित अनुपात– व्यावसायिक बैंकों की जमाओ का वह अनुपात जो व्यावसायिक बैंक नकद के रूप में केंद्रीय बैंक के पास जमा करते है | नकद आरक्षित अनुपात में वृद्धि व्यावसायिक बैंकों के अतिरिक्त कोषों में कमी करती है फलस्वरूप उनकी साख निर्माण की क्षमता में कमी आती है |
(अन्य कोई दो उपयुक्त उपाय)
अथवा
केंद्रीय बैंक देश में मुद्रा जारी करने की एक मात्र संस्था है | मुद्रा जारी करने पर केंद्रीय बैंक का एकाधिकार होने के कारण जारी की गयी मुद्रा में एकरूपता पाई जाती है</td><td>2

4</td></tr>
<tr><td>20.</td><td>19.</td><td>21.</td><td>एक अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण उस बिंदु पर किया जाता है जहाँ पर नियोजित बचत और नियोजित निवेश समान होते है |

उपरोक्त रेखाचित्र में संतुलन बिंदु E पर बचत तथा निवेश समान है तथा राष्ट्रीय आय का स्तर OY है |
उत्पादन का वह स्तर जो संतुलन बिंदु से कम है वहां S < I से अभिप्राय यह होगा कि अनियोजित माल सूची निवेश में कमी आयेगी | माल सूची निवेश को नियोजित स्तर पर लाने के लिए उत्पादक, उत्पादन में वृद्धि करेंगे | आय में वृद्धि से बचत बढेगी जब तक संतुलन बिंदु E पर S = I न हो जाये |
(यदि :- S > 1 से व्याख्या की जाये तो वह भी मन्य है)
(दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए कोई भी उपयुक्त संख्यात्मक तालिका)</td><td>1

1½

1½

1½</td></tr>
<tr><td>21.</td><td>20.</td><td>19.</td><td>निवेश में परिवर्तन के फलसवरूप आय में परिवर्तन के अनुपात को निवेश गुणक कहते है |
संख्यात्मक उदाहरण
माना ΔI = ₹ 100 करोड
MPC = 0.80
₹ 100 करोड़ का प्रारंभिक निवेश ₹ 100 करोड़ की आय सृजित करता है | प्रथम चक्र में यह अतिरिक्त आय, उपभोग व्यय में वृद्धि करती है | उसके फलस्वरूप और अधिक आय का सृजन होता है | (क्योकि एक व्यक्ति का उपभोग दूसरें व्यक्ति की आय होता है |) यह प्रक्रिया जब तक चलती है तब तक कुल आय, निवेश गुणक तथा प्राम्भिक निवेश के गुणा के बराबर न हो जाये |
<table>
<tr><th>Round</th><th>ΔY</th><th>ΔC</th><th>ΔS</th></tr>
<tr><td>I</td><td>100 →</td><td>80</td><td>20</td></tr>
<tr><td>II</td><td>80 ←→</td><td>64</td><td>16</td></tr>
<tr><td>III</td><td>64 ←</td><td>51.2</td><td>12.8</td></tr>
<tr><td></td><td>–</td><td>–</td><td>–</td></tr>
<tr><td></td><td>–</td><td>–</td><td>–</td></tr>
<tr><td></td><td>–</td><td>–</td><td>–</td></tr>
<tr><td>Total</td><td>500</td><td>400</td><td>100</td></tr>
</table>
(अथवा अन्य कोई उपयुक्त उदाहरण)
$K = \frac{1}{1 - MPC}$</td><td>1

3</td></tr>
</table>

			$K = \frac{1}{1-0.8}$ $K = 5$ So $\Delta Y = K.\Delta I$ $= 5 \times 100$ $= 500$ **(बिना तालिका के व्याख्या भी मान्य है)**	
22.	23.	23.	(a) राजस्व व्यय – सरकार का ऐसा व्यय जिससे न तो सरकार की परिसम्पत्तियो में वृद्धि होती है और न ही सरकार के दायित्वयो में कमी आती है। पूंजीगत व्यय – सरकार का ऐसा व्यय जिससे या तो सरकार की परिसम्पत्तियो में वृद्धि होती है और या तो सरकार के दायित्वयो में कमी आती है। (b) "राजकोषीय घाटा" उधार छोडकर कुल प्राप्तियो पर कुल व्यय की अधिकता को राजकोषीय घाटा कहते है। जबकि प्राथमिक घाटा – प्राथमिक घाटा, राजकोषीय घाटा तथा ब्याज भुगतान का अंतर है। **अथवा** राजस्व प्राप्तियाँ - सरकार की वह प्राप्तियाँ जिससे न तो सरकार की परिसम्पत्तियो में कमी आती है और न ही सरकार के दायित्वयो में वृद्धि होती है। जबकि , पूंजीगत प्राप्तियाँ – सरकार की वह प्राप्तियाँ जिससे या तो सरकार की परिसम्पत्तियो में कमी आती है या तो सरकार के दायित्वयो में वृद्धि होती है। राजस्व प्राप्तियों के घटक - कर प्राप्तियाँ (प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष) - गैर कर राजस्व प्राप्तियाँ पूंजीगत प्राप्तियों के घटक - ऋणों की वसूली - उधार तथा अन्य दायित्व - अन्य प्राप्तियाँ (जैसे विनिवेश)	1½ 1½ 1½ 1½ 3 1½ 1½
23.	24.	22.	स्थिर विनिमय दर: स्थिर विनिमय दर वह दर होती है जो सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है तथा जिस दर पर घरेलु मुद्रा का विदेशी मुद्रा में विनिमय किया जाता है। नम्य विनिमय दर: वह दर है जिसका निर्धारण विदेशी विनिमय बाज़ार में विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा किया जाता है। विदेशी विनिमय की मांग तथा विदेशी विनिमय दर के बीच विपरीत सम्बन्ध होता है तथा विदेशी विनिमय की पूर्ति तथा विदेशी विनिमय दर में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। विदेशी विनिमय की वह दर जिस पर विदेशी-विनिमय की मांग और पूर्ति समान होती है उसे विनिमय की संतुलन दर कहा जाता है। (आरेख आवश्यक नहीं)	2 4
24.	22.	24.	(a) सकल घरेलु उत्पाद (बाजार मूल्य पर) = (ii) + (i) + (iii) + (iv) = 3,500 + 4,000 + 1,100 + 500 = ₹ 9,100 करोड़ (b) कारक लागत निवल राष्ट्रीय उत्पाद = बाज़ार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद– (ix) + (v) – (vi) = 9,100 – 120 + 100 – 300 = ₹ 8,780 करोड़ **(यदि केवल अंतिम जवाब लिखा जाये तो कोई अंक नहीं दें)**	1½ 1 ½ 1½ 1 ½